शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति में परिवर्तन (नैनीताल नगर के सन्दर्भ में)

किशोर कुमार (शोधार्थी)
डॉ.ज्योति जोशी
डी.एस.बी.कॉलेज
नैनीताल, उत्तराखंड, भारत

शोध संक्षेप

भारतीय समाज की परम्पराओं, रूढ़ियों, परिवारिक मूल्यों एवं आदर्शों के कारण महिलाओं ने शताब्दियों तक खुली हवा में सांस नही ली है। औद्योगिक क्रांति ने आर्थिक जगत में जीविका के अनेक विकल्प खोल दिए। जिसके परिणामस्वरूप रूढ़िवादी परम्परा का अन्त एवं साथ ही महिलाएं अपने अधिकारों से परिचित होने लगीं। औद्यागिक समाज में महिलाओं को काम के अनेक अवसर प्राप्त हुए। वे पुरूषों की आर्थिक दासता से मुक्त होकर घर की चहारदीवारी से निकलकर बाह्य जगत से परिचित हुई हैं। महिलाएं स्वंय विभिन्न उद्योगों एवं अन्य व्यवसायों में कार्य करने लगी हैं। वर्तमान समय में महिलाएं सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक सभी क्षेत्रों में पुरूषों के समान कार्य करने लगी हैं।1 यद्यपि इस प्रवृत्ति से उनकी प्रस्थिति में तुलनात्मक रूप से सुधार हुआ है, जो असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं के कार्यस्वरूप में आये परिवर्तन को प्रदर्शित करती है। प्रस्तुत शोध पत्र में नैनीताल नगर में असंगठित क्षेत्र के अंतर्गत सेवा क्षेत्र को अध्ययन की ईकाई मानकर इन क्षेत्रों में कार्यरत 80 महिलाओं को संगणना पद्धति के आधार पर चयनित कर महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति में परिवर्तन का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

भारतीय पुरुष प्रधान समाज में महिलाएं सम्पन्नहीनता, निरक्षरता, शिक्षा, कला-कौशल की कमी के चलते सामाजिक-आर्थिक विकास से कोसों दूर हैं, जिसके परिणाम स्वरूप महिलाओं को पुरुषों पर निर्भर रहना पड़ता है। जिस कारण महिलाओं को प्राचीन से वर्तमान तक सामाजिक-आर्थिक एंव सांस्कृतिक निर्योग्यताओं का सामना करना पड़ा है। विभिन्न कालों में महिलाओं की बढ़ती हुई समस्याओं एवं शोषण को दृष्टिगत रखते हुए आधुनिक युग में महिलाओं के हितों की रक्षा एवं उनकी प्रस्थिति में सुधार हेतु समाज सुधारकों एवं विभिन्न संस्थाओं ने अनेक प्रयास किये। जिससे महिलाओं की स्थिति में व्यापक सुधार आया तथा महिलाओं से सम्बद्ध कई सामाजिक बुराइयों पर नियंत्रण पाया जा सका।1 जिसके फलस्वरूप महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति में भी काफी सुधार आया। महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति के प्रति बदलते हुए दृष्टिकोण के सम्बन्ध में हाटे (1969), कपाडिया (1954-55,1958-59) ने बताया कि महिलाओं की प्रस्थिति व भूमिका के

साथ ही विभिन्न पक्षों में विचारणीय परिवर्तन आया है, जिसके फलस्वरूप महिलाओं के जीवन स्तर में काफी परिवर्तन आया है।(2,3)

18वीं एवं 19वीं सदी के सामाजिक परिवेश में औद्योगीकरण एवं नगरीकरण की प्रक्रिया ने भी महिलाओं की प्रस्थिति को परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जिसके परिणामस्वरूप महिलाओं में आर्थिक आत्मनिर्भरता पनपी है। वे पुरूषों की आर्थिक दासता से मुक्त होकर घर की चहारदीवारी से निकलकर बाह्य जगत से परिचित हुई है। महिलाएं स्वंय विभिन्न उद्योगों एवं अन्य व्यवसायों में कार्य करने लगी हैं।4

औद्योगीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप समाज में श्रमिक वर्ग का जन्म हुआ। जिसमें संगठित एवं असंगठित श्रमिक वर्ग थे। संगठित श्रमिक वे श्रमिक हैं, जो अपने रहन-सहन का स्तर सुधारने हेतु राष्ट्रीय स्तर पर संगठित होकर प्रयास करते रहते हैं जबकि असंगठित श्रमिक, वे है जो अपनी आर्थिक दशा सुधारने हेतु संगठित होकर अपने नियोक्ताओं से अपने अधिकारों की बात नहीं कर पाते हैं। जिससे वे अपने अधिकारों से वंचित रह जाते है।

इस संदर्भ में कारखाना अधिनियम 1948 के अंतर्गत असंगठित क्षेत्र में कार्यरत श्रमिक वे श्रमिक हैं जो प्रमुख प्रावधानों जैसे स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं कल्याण सम्बन्धी उपबन्ध आदि की परिधि से बाहर हैं, जबकि सामाजिक सुरक्षा अधिनियम 2008 के अनुसार,असंगठित क्षेत्र के श्रमिक वे श्रमिक हैं जो घरेलू कार्य, स्वरोजगार एंव वेतन पर कार्य कर रहे हों तथा जिनको अधिनियम की अनुसूची-II में शामिल न किया गया हो, जबकि "व्यक्तिगत या स्वरोजगार के स्वामित्व वाले व्यावसाय जो उत्पादन, वस्तुओं की बिक्री या सेवाएं उपलब्ध कराने के कामों में संलग्न हैं और जहां श्रमिकों की संख्या दस से कम हो, असंगठित क्षेत्र कहलाता है। इसके अतिरिक्त असंठित क्षेत्रों में 'वह श्रमिक है जो गाँव अथवा शहरों में मजदूरी पर अस्थायी रूप से काम करते हैं। चूँकि यह श्रमिक वर्ग मुख्यत: बिखरा हुआ होता है। अतः इनका परस्पर संगठन नही हो पाता है।"5

असंगठित क्षेत्र एक व्यापक क्षेत्र है, जिसमें महिलाओं का बड़ा भाग एक उद्यमी के रूप में कार्यरत् है। परन्तु रोजगार के स्तर एंव गुणवत्ता की दृष्टि से वह संगठित क्षेत्रों में कार्यरत् महिलाओं से पीछे रह जाती है। भारत की कुल श्रम शक्ति में काम करने वाले लोगों का 85 प्रतिशत से ज्यादा असंगठित क्षेत्र में कार्यरत् है। भारत के महापंजीयक एवं 2011 की जनगणना से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार भारत में महिला कार्मिकों की कुल संख्या 14.98 करोड़ है और ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में महिला श्रमिकों की संख्या क्रमशः 12.18 करोड़ तथा 2.8 करोड़ है। कुल 14.98 करोड़ महिला श्रमिकों में से 3.59 करोड़ महिलाएं खेतीहर मजदूर, जबकि 6.15 करोड़ कृषक तथा शेष महिला श्रमिको में से 85 लाख महिलाएं घरेलू उद्योगों और 4.37 करोड़ अन्य श्रमिक के रूप में वर्गीकृत हैं।6

असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं पर अनेक अध्ययन किये गये हैं, जिसमें मैकाइवर व पेज, (1955) ने अपने अध्ययन में पाया कि महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति एवं भूमिका में परिवर्तन हो रहा है। अब महिलाएं घर के कार्यो के अतिरिक्त आय उपार्जन भी करती हैं, जिससे महिलाओं की पुरूषों पर निर्भरता कम होने के साथ ही उनकी आर्थिक स्वतंत्रता भी बढ़ती जा रही है।7 अतः महिलाओं की प्रस्थिति

में परिवर्तन को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत शोध पत्र में नैनीताल नगर के असंगठित क्षेत्र के अन्तर्गत विभिन्न सेवा क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति में परिवर्तनों का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र एंव निदर्शन पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र की अध्ययन की ईकाई नैनीताल नगर के असंगठित क्षेत्र के कुटीर क्षेत्रों में कार्यरत महिलायें हैं। नैनीताल, उत्तराखण्ड राज्य का प्रमुख पर्यटन नगर है। भारत की जनगणना 2011 के अनुसार नैनीताल नगर की जनसंख्या 41,377 है, जिसमें पुरूषों की संख्या 21,648 तथा महिलाओं की संख्या 19,729 है। नैनीताल नगर 13 वार्डों में बंटा हुआ है। इसकी साक्षरता दर 92.93 प्रतिशत है जबकि उत्तराखण्ड की साक्षारता दर 78.82 प्रतिशत है। नैनीताल नगर की महिला साक्षारता दर 89.47 प्रतिशत एंव पुरूष साक्षरता दर 96.09 प्रतिशत है। यह स्थिति नैनीताल नगर के सेवा क्षेत्र में भी पायी गई जिसमें सभी महिलायें साक्षर हैं। साक्षरता के आधार पर अधिकांश 47.50 प्रतिशत महिलाएं उच्च शिक्षित, 25 प्रतिशत अन्य तकनीकी योग्यता तथा शेष माध्यमिक एवं इण्टर हैं, जो पारिवारिक समस्याओं तथा स्वयं की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सेवा क्षेत्रों में कार्यरत् हैं, जबकि उच्च शिक्षित महिलाओं का इन क्षेत्रों में रोजगार करने का प्रमुख कारण बाहरी क्षेत्रों में न जा पाना तथा रोजगार की समस्या है। नैनीताल नगर की 41.1 प्रतिशत महिलाएं मुख्य कर्मकार, सीमान्त एंव खेतिहर कर्मकार हैं, 24 प्रतिशत महिलाएं कृषक कर्मकार के रूप में जबकि 5.7 प्रतिशत घरेलू उद्योगों एंव 29.2 प्रतिशत अन्य कार्यो में संलग्न हैं।8

प्रस्तुत शोध पत्र में नैनीताल नगर के असंगठित क्षेत्र के सेवा क्षेत्रों में कार्यरत् 80 महिला कर्मियों को संगणना पद्धति के आधार पर चयनित किया गया है। जिसमें मोमबत्ती निर्माण, सिलाई-बुनाई तथा साफ्टटॉय (soft toy) निर्माण उद्योगों में संलग्न महिलाओं को सम्मिलित किया गया है। जिनका विवरण निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया गया हैं।

सारणी संख्या-1.01

क्रम	सेवा क्षेत्र	महिलाओं की संख्या	प्रतिशत
1	ब्यूटी पार्लर	30	37.50
2	होटल	08	10.00
3	दुकान	42	52.50
4	योग	80	100

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि नैनीताल नगर के असंगठित क्षेत्र में सम्बंधित ब्यूटी पार्लर में कार्यरत् महिला कार्मिका का प्रतिशत 37.5 है, जबकि होटलों में वेट्रस के रूप में कार्यरत महिला का प्रतिशत 10 है। दुकानो में सेल्स गर्ल्स के रूप में कार्यरत् महिला कर्मियों का सर्वाधिक प्रतिशत 52.5 है।

भारतीय समाज में, औद्योगीकरण एवं आधुनिकीकरण के पश्चात् असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत् महिलाओं में भी संगठित क्षेत्रों में कार्यरत् महिलाओं की भांति एवं दोनों ही क्षेत्रों में एक उद्यमी श्रमिक के रूप में घर से बाहर कार्य करने की प्रवृति विकसित हुई है, जिसके फलस्वरूप उनकी वैवाहिक एवं पारिवारिक भूमिका में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है। इस संदर्भ में चन्द्रकला हाटे (1969)[10] स्पष्ट करती हैं कि कार्योजन द्वारा महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक जीवन स्तर पर परिवर्तन आया है। साथ ही महिलाओं की जीवन शैली को भी प्रभावित

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

किया है। इस उद्देश्य के आधार पर प्रस्तुत शोध पत्र को सेवा क्षेत्र से जुड़ी महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक में प्रस्थिति परिवर्तन को उनकी शैक्षिक, वैवाहिक एवं पारिवारिक भूमिका के आधार पर निम्न तालिकाओं द्वारा विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

शैक्षिक आधार पर प्रस्थिति में परिवर्तन

शिक्षा मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन का प्रमुख आधार है। शिक्षा द्वारा मनुष्य अपने जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। पूर्व में जहां महिलाओं को शिक्षा के अधिकार से वंचित रखा जाता था, वही वर्तमान में महिलाओं की शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन देखने को मिलता है। ओद्यौगीकरण के परिणामस्वरूप शिक्षित महिलाएं विभिन्न व्यवसायों में एक कार्मिक के रूप में कार्यरत हैं। शिक्षा के कारण ही अधिकांश महिलाएं आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न हुई हैं। आज वे अन्य पर आश्रित नहीं हैं, बल्कि वे स्वयं जीविकोपार्जन कर रही हैं। वर्तमान में महिलाएं प्रायः प्रत्येक व्यवसाय करती हुई देखी जा सकती हैं। उच्च पदों पर आसीन होने में शिक्षा की भूमिका सर्वाधिक मानी जा सकती है।

शिक्षा की व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस सम्बन्ध में अध्ययनकर्ता ने सेवा क्षेत्रों में कार्यरत् महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति के सम्बंध में जो तथ्य प्राप्त किये हैं, उनके बारे में निम्नलिखित सारणी सारगर्भित प्रकाश डालती है।

सेवा क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं की मनोवृत्ति शिक्षा एवं कार्यकुशलता के सहसम्बन्ध के प्रति पूर्ण सहमत होने की पायी गयी। जबकि 29.83 प्रतिशत महिलाएं इस कथन के प्रति जागरूक नही पायी गयीं। प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अधिकांश महिलाओं का दृष्टिकोण शिक्षा के प्रति पूर्ण जागरूकता का पाया गया। इस सन्दर्भ में निम्नलिखित सारणी विवरण प्रस्तुत करती है -

सारणी-1.02 शिक्षा के कारण महिला जागरूकता में वृद्धि के संदर्भ में उत्तरदात्रियों का प्रत्युत्तर

सेवा क्षेत्र			
क्रम	**प्रत्युत्तर का स्वरूप**	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
1	हाँ	52	65
2	नही	16	20
3	कह नही सकती	12	15
4	योग	80	100

उपर्युक्त तालिका द्वारा स्पष्ट होता कि नैनीताल नगर के असंगठित क्षेत्र में कार्यरत अधिकांश महिलाओं के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि शिक्षा के प्रसार द्वारा महिलाओं की जागरूकता में वृद्धि होती है। अतः शोध पत्र का निर्वचन करते हुए यह कहा जा सकता है कि शिक्षा महिला जागरूकता लाने में प्रभावी उपकरण साबित हुई है। इस सम्बंध में अवसर प्राप्त होने पर महिलाओं को शिक्षा आगे जारी रखने के संदर्भ में प्रत्युत्तर का विश्लेषण निम्नतलिका द्वारा किया गया है।

सारणी-1.03

अवसर प्राप्त होने पर क्या आप आगे शिक्षा जारी रखना के संदर्भ में उत्तरदात्रियों का प्रत्युत्तर

सेवा क्षेत्र			
क्रम	**प्रत्युत्तर का स्वरूप**	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
1	हाँ	48	60.00
2	नही	26	32.50
3	कह नही सकती	06	7.50
4	योग	80	100

उपर्युक्त तालिका द्वारा स्पष्ट होता कि नैनीताल नगर के सेवा क्षेत्र में कार्यरत् अधिकांश 60

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्रतिशत महिलाएं अवसर प्राप्त होने पर वर्तमान में शिक्षा सुचारू रूप से चलाना महत्वपूर्ण समझती हैं, जबकि 32.50 प्रतिशत महिलाएं पारिवारिक एवं आर्थिक समस्याओं के कारण शिक्षा सुचारू रूप से चलाना महत्वपूर्ण नही समझती हैं। पारिवारिक एवं आर्थिक समस्याओं के परिणामस्वरूप कार्यरत् महिलाओं को असंगठित क्षेत्रों में कार्य करना पड़ता है। इस आधार पर स्पष्ट होता है कि वे महिलाएं जो वर्तमान में अवसर प्राप्त होने पर शिक्षा सुचारू रूप से चलाना महत्वपूर्ण समझती हैं, उनमें 25 प्रतिशत महिलाएं तकनीकी क्षेत्र, 14.58 प्रतिशत महिलाएं गृह विज्ञान, 25 प्रतिशत चिकित्सा के क्षेत्र में, 27.08 प्रतिशत महिलाएं कानूनी जबकि 8.49 प्रतिशत महिलाएं अन्य क्षेत्रों जैसे बैंकिंग एवं ओद्यौगिक क्षेत्रों इत्यादि में संलग्न होना चाहती है।

सारणी-1.04 यदि हाँ तो- अपनी शैक्षिक आकाक्षांओ का विस्तार किस क्षेत्र में करने के संदर्भ में उत्तरदात्रियों का प्रत्युत्तर

सेवा क्षेत्र			
क्रम	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1	तकनीकी क्षेत्र में	12	25.00
2	गृह विज्ञान/गृह सज्जा के क्षेत्र में	07	14.58
3	संगीत के क्षेत्र में	-	-
4	चिकित्सा के क्षेत्र में	12	25.00
5	कानूनी क्षेत्र में	13	27.08
6	अन्य	04	8.34
7	योग	48	100

सारणी संख्या-1.05

सह-शिक्षा (लड़के-लड़कियों का साथ में पढना) में सहमति का स्तर के संदर्भ में उत्तरदात्रियों का प्रत्युत्तर

कुटीर उद्योग क्षेत्र			
क्रम	प्रत्युत्तर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
1	पूर्णत: संतुष्ट	24	30.00
2	संतुष्ट	16	20.00
3	पूर्णत: असंतुष्ट	20	25.00
4	असंतुष्ट	14	17.50
5	तटस्थ	06	7.50
6	योग	80	100

उपर्युक्त तालिका द्वारा स्पष्ट होता कि शिक्षा के प्रसार द्वारा नैनीताल नगर के सेवा क्षेत्र में कार्यरत्अधिकांश 50प्रतिशत महिलाओं का सह-शिक्षा में सहमति का स्तर पूर्णतरू संतुष्टएवं संतुष्ट पाया गया। जबकि 42.5 प्रतिशत महिलाओं की सहमति का स्तर पूर्णतरू असंतुष्टपाया गया।

वैवाहिक स्थिति के आधार पर प्रस्थिति में परिवर्तन

विवाह एक मौलिक और सार्वभौमिक सामाजिक संस्था है जो प्रत्येक देश, काल, समाज और संस्कृति में पायी जाती रही है। विवाह द्वारा आर्थिक सहकार, सामाजिक दायित्व और आत्मीय भावनात्मक सम्बन्ध की श्रंखला भी जुडने लगती है। व्यक्ति की वैवाहिक स्थिति उसके सामाजिक सम्बन्धों, दायित्वों तथा भूमिकाओं को निर्धारित करती है और उसके सामाजिक सम्बन्धों के विस्तारण में महत्वपूर्ण योगदान देती है। इस सन्दर्भ में नैनीताल नगर के सेवा क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं की वैवाहिक स्थिति द्वारा स्पष्ट होता कि इन क्षेत्रों में सर्वाधिक 70.00 प्रतिशत अविवाहित महिलाएं कार्यरत है। इन अविवाहित महिलाओं का इन क्षेत्रों में कार्य करने का प्रमुख कारण आत्मनिर्भर बनने के साथ शैक्षिक स्थिति में वृद्वि करना है। प्रस्तुत शोध पत्र में महिलाओं का जीवन साथी के चुनाव एवं

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

विवाह पद्धति सम्बंध उनके विचारों को निम्न सारणी द्वारा विश्लेषित करने का प्रयास किया है।

सारणी संख्या-1.06

जीवन साथी के चुनाव के संदर्भ में उत्तरदात्रियों का प्रत्युत्तर

सेवा क्षेत्र			
क्रम	**प्रत्युत्तर का स्वरूप**	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
1	पूर्णतया माता-पिता की ईच्छानुसार	48	60.00
2	पूर्णतयाअपनी ईच्छानुसार	15	18.75
3	दोनों की इच्छा से	17	21.25
4	योग	80	100

सारणी संख्या-1.07

विवाह की पद्धति के संदर्भ में उत्तरदात्रियों का प्रत्युत्तर

सेवा क्षेत्र			
क्रम	**प्रत्युत्तर का स्वरूप**	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
1	परम्परागत	44	55
2	न्यायलय में	16	20
3	धार्मिक स्थलों में	20	25
4	योग	80	100

सारणी संख्या-1.08

दहेज प्रथा का प्रचलन के संदर्भ में उत्तरदात्रियों का प्रत्युत्तर

सेवा क्षेत्र			
क्रम	**प्रत्युत्तर का स्वरूप**	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
1	हाँ	26	32.50
2	नही	34	42.50
3	कह नही सकती	20	25.00
4	योग	80	100

भारतीय समाज में अधिकांशतः विवाह के लिए माता-पिता की स्वीकृति को अधिक प्रधानता दी जाती रही है। महिलाओं से प्राप्त जानकारी के अनुसार भी उपर्युक्त तालिकाओं द्वारा इस तथ्य की पुष्टि होती है। अधिकांश महिलाएं 60 प्रतिशत के विवाह का निर्धारण उनके माता-पिता के द्वारा ही किया जाना चाहिए। जबकि अपनी इच्छानुसार जीवन साथी का चुनाव करने वाली महिलाओं का प्रतिशत 18.75 है, जिससे स्पष्ट होता है कि पारम्परिक निर्धारित विवाह को स्वीकार करने की प्रवृत्ति में परिवर्तन आ रहा है, जबकि विवाह पद्धति के आधार पर 14.52 प्रतिशत महिलाएं ऐसी भी पाई गयी जो विवाह न्यायलयों में किए जाने को उचित मानती हैं, जो मुख्यत: प्रेम विवाह की स्थिति को दर्शाता है। इसी संदर्भ में कपाड़िया (1958), देसाई (1945) आदि ने अपने अध्ययनों में पाया कि महिलाओं का पारम्परिक विवाह के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन आ रहा है। भारतीय सामाजिक परिप्रेक्ष्य में दहेज प्रथा एक प्रतिबंधित प्रथा है। यह ज्ञात होते हुए भी सेवा क्षेत्र में कार्यरत 32.50 प्रतिशत महिलाओं के समाज में आज भी इस प्रथा का प्रचलन है, जबकि अधिकांश 42.50 प्रतिशत महिलाएं ऐसी भी हैं जो दहेज प्रथा की पूर्णतः विरोधी हैं। जिससे स्पष्ट होता है कि महिलाएं इस कुप्रथा के अंत के लिए प्रयासरत हैं।

पारिवारिक स्थिति के आधार पर प्रस्थिति में परिवर्तन

परिवार मानव जाति के आत्म संरक्षण, वंशवर्धन और जातीय जीवन में निरन्तरता को बनाये रखने का एक प्रमुख साधन ही नहीं, अपितु यह शिशु के लालन-पालन, सामाजीकरण और शिक्षण में भावात्मक घनिष्ठता का वातावरण प्रदान करता है। परिवार एक प्राकृतिक संस्था है जहाँ व्यक्ति का समाजीकरण भी होता है और व्यक्तित्व का निर्माण भी। व्यक्ति की जैविकीय

आवश्यकताओं की पूर्ति जहाँ परिवार में होती है वहीं उसके मानसिक सामाजिक और धार्मिक सोच के विकास में इसका महत्वपूर्ण योगदान है। इसी संदर्भ में पारिवारिक स्थिति के आधार पर निम्नलिखित सारणी द्वारा महिलाओं की परिवारिक प्रस्थिति में परिवर्तन को जानने का प्रयास किया गया है।

सारणी-1.09

पारिवारिक स्वरूप के संदर्भ में उत्तरदात्रियों की प्राथमिकता

सेवा क्षेत्र			
क्रम	**प्रत्युत्तर का स्वरूप**	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
1	संयुक्त	23	28.75
2	एकाकी	57	71.25
3	योग	80	100

उपर्युक्त तालिका द्वारा स्पष्ट होता कि नैनीताल नगर के सेवा क्षेत्र में कार्यरत 71.25 प्रतिशत महिलाएं एकाकी परिवार में रहने को प्राथमिकता देती है। जबकि 28.75 प्रतिशत महिलाएं अभी भी संयुक्त परिवार को प्राथमिकता देती हैं, जिससे स्पष्ट होता है कि सेवा क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं के सामाजिक परिवेश में एकाकी परिवार बहुसंख्या में होने का प्रमुख कारण भारतीय सामाजिक व्यवस्था में संयुक्त परिवारों का स्वरूप धीरे-धीरे विघटित होना है।

भारतीय समाज में प्रायः महिलाओं की स्थिति पुरूषों की तुलना में द्वितीयक रहती है। इस संदर्भ में गोरे ने लिखा है कि "आयु तथा पीढी सम्बंधी वरिष्ठता समाज में महिलाओं को कुछ पुरूषों के सम्बंध में उच्च प्रतीकात्मक स्थिति प्रदान कर सकती है, परन्तु समान्यतः सभी समाजों में पुरूषों की श्रेष्ठता, परम्परा व सम्पत्ति पर उसके अधिकार से समर्थित होती है।" इस संदर्भ में परिवार में महिलाओं की प्रस्थिति को निम्नलिखित सारणी द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

सारणी-1.10

परिवार में महिलाओं की प्रस्थिति के संदर्भ में उत्तरदात्रियों का प्रत्युत्तर

सेवा क्षेत्र			
क्रम	**प्रत्युत्तर का स्वरूप**	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
1	पुरूषों के समान	52	65.00
2	पुरूषों से बेहतर	22	27.50
3	पुरूषों से निम्न	06	7.50
4	योग	80	100

उपर्युक्त तालिका द्वारा स्पष्ट होता कि नैनीताल नगर के सेवा क्षेत्र में कार्यरत अधिकांश 92.5 प्रतिशत महिलाओं की परिवार में प्रस्थिति पुरूषों के समान एवं पुरूषों से बेहतर है। जबकि वर्तमान सामाजिक परिवेश के संदर्भ में 7.50 प्रतिशत महिलाओं की प्रस्थिति पुरूषों से निम्न है। जिससे स्पष्ट होता है कि सेवा क्षेत्र में महिलाओं की परिवार में स्थिति उच्च है, जो सामाजिक पितृसत्तात्मक समाज के प्रति विपरीत दृष्टिकोण को दर्शाता है। जिससे परिवार में महिलाओं की स्थिति में सुधारात्मक परिवर्तन आया है।

ओद्यौगीकरण एवं नगरीकरण के परिणामस्वरूप महिलाओं की भूमिकाओं में निरन्तर वृद्धि हो रही है और वे एक गृहणी के अतिरिक्त अन्य भूमिकाओं का भी निर्वहन कर रही है। जिससे परिवार में महिलाओं की भूमिका, प्रस्थिति एवं निर्णय लेने की क्षमता पर भी प्रभाव पड़ा है। महिलाओं की आर्थिक भूमिका एवं आर्थिक क्रियाकलापों में सहभागिता के अवसरों का कोई भी मूल्यांकन महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक विकास के आधारभूत घटकों को ध्यान में रखे बिनानही किया जा सकता है। अतः प्रस्तुत शोध

पत्र में भी महिलाओं की पारिवारिक आर्थिक स्वतंत्रता एवं भूमिका के विभिन्न पक्षों के सम्बंध में कार्यरत महिलाओं के दृष्टिकोण एवं विचारों को निम्नलिखित सारणी द्वारा विश्लेषित किया गया है।

सारणी-1.11

पुरूषों के समान एवं बेहतर होने की स्थिति में महत्वपूर्ण पारिवारिक निर्णय लेने के संदर्भ का प्रत्युत्तर

सेवा क्षेत्र			
क्रम	**प्रत्युत्तर का स्वरूप**	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
1	महिलाओं द्वारा	42	56.75
2	पुरूषों द्वारा	22	29.73
3	संयुक्त रूप से	10	13.52
4	योग	74	100

उपर्युक्त सारणी के तथ्यों के आधार पर स्पष्ट होता है कि उत्तरदात्रियों का एक वृहद समूह अर्थात 56.75 प्रतिशत ने यह उद्घाटित किया कि महत्वपूर्ण परिवारिक निर्णयों में महिलाओं की सहभागिता होती है, जबकि 29.73 प्रतिशत महिलाओं के परिवार में महत्वपूर्ण परिवारिक निर्णय पुरूषों द्वारा लिए जाते हैं, जो आज भी परिवार में पितृवंशीय व्यवस्था को दर्शाता है।

सारणी-1.12

परिवारिक आर्थिक निर्णयों में स्वयं की सहभागिता के संदर्भ में उत्तरदात्रियों का प्रत्युत्तर

सेवा क्षेत्र			
क्रम	**प्रत्युत्तर का स्वरूप**	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
1	हाँ	56	70.00
2	नही	14	17.50
3	अस्पष्ट	10	12.50
4	योग	80	100

उपर्युक्त तालिका द्वारा स्पष्ट होता कि नैनीताल नगर के सेवा क्षेत्र में कार्यरत अधिकांश 70 प्रतिशत महिलाएं आर्थिक ईकाई बनने के पश्चात् पारिवारिक आर्थिक संवर्धन मात्र नही है, अपितु पारिवारिक आर्थिक निर्णयों में भी उनकी निर्णायक भूमिका रहती है। जिससे स्पष्ट होता है कि महिलाओं की पारिवारिक आर्थिक निर्णयों में व्यक्तिगत रूप से सहभागिता एवं महत्वपूर्ण पारिवारिक व्यय पर उनकी राय को आवश्यक समझा जाता है। यद्यपि 17.50 प्रतिशत महिलाओं की पारिवारिक आर्थिक निर्णयों में उनकी निर्णायक भूमिका नही रहती है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. Desai, N. 1957, "women in mordern india", Vora and Co.Bombay,.

2 भारत 2012, "वार्षिक सन्दर्भ ग्रन्थ', सूचना और प्रसारण मंत्रालय, 2012, पी0पी0- 848-849।

3. http://labour.gov.in/content/division/women-labour.php.

4. Bhagwati J. & srinivas.T.N., "Indians economic reforms" 1993.

5. www.census2011.co.in/data/town//800331-nainital-uttarakhand-html

6.http://www.census2011.co.in/census/state/uttarakhand.html

7 सिन्हा॰पी॰आर॰ ,इन्दुबाला, "श्रम एंव समाज कल्याण', भारती भवन (पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स), 2011, पी.पी.-249